Most Trusted Learning Platform

Reading Comprehension

By Sanjeev Tiwari Sir

परिच्छेद-1

- तथाकथित धार्मिक संप्रदायों के संबंध में, यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का आकलन करने के लिये कहा जाए, तो धर्म के रूप में ऐसी कोई बात नहीं होगी जो गलत हो; किंतु यदि वे एक-दूसरे के धर्म का आकलन करते हैं, तो धर्म के रूप में ऐसी कोई बात नहीं होगी जो सही हो, और इसलिये धर्म के संदर्भ में, संपूर्ण विश्व सही है या संपूर्ण विश्व गलत है।

UPSC-2021

1. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, सर्वाधिक तर्कसंगत पूर्वधारणा कौन-सी हो सकती है?

(a) कोई भी व्यक्ति किसी धार्मिक संप्रदाय का अनुयायी बने बिना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

(b) प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने धार्मिक संप्रदाय का प्रसार करे।

(c) धार्मिक संप्रदायों में मनुष्य की एकता की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति होती है।

(d) लोग अपने धार्मिक संप्रदाय को नहीं समझते हैं।

परिच्छेद-2

❖ यह निश्चित है कि राजद्रोह, युद्ध, और विधि (लॉ) की अवहेलना अथवा उल्लंघन को प्रजा की अनैतिकता पर उतना नहीं मढ़ा जा सकता, जितना कि उस अधिराज्य (डोमिनियन) की बुरी स्थिति पर। क्योंकि, मनुष्य जन्मजात रूप से नागरिकता के लिये उपयुक्त नहीं होते हैं, अपितु उन्हें नागरिकता के लिये उपयुक्त बनाया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त, मनुष्य में नैसर्गिक मनोभाव सर्वत्र समान होते हैं; और यदि अनैतिकता अधिक प्रबल होती है, और किसी राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) में, दूसरे राष्ट्रमंडल की तुलना में अधिक अपराध होते हैं, तो यह निश्चित है कि पूर्ववर्ती राष्ट्रमंडल ने एकता के लक्ष्य के लिये पर्याप्त रूप से न तो प्रयास किया है, और न ही पूर्व विचार करके अपनी विधि बनाई है; और इसीलिये, वह राष्ट्रमंडल के रूप में अपने अधिकार को बेहतर बनाने में विफल रहा है।

UPSC-2021

2. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) प्रत्येक अधिराज्य में राजद्रोह, युद्ध और विधि के उल्लंघन अपरिहार्य हैं।

(b) किसी अधिराज्य में सभी समस्याओं के लिये संप्रभु (सॉवरेन) उत्तरदायी होता है, न कि जनता।

(c) वह अधिराज्य सर्वोत्तम है जो एकता के लक्ष्य के लिये प्रयास करता है और जिसके पास सु-नागरिकता (गुड सिटिज़नशिप) के लिये विधि (लॉ) है।

(d) लोगों द्वारा अच्छा अधिराज्य स्थापित कर पाना असंभव है।

परिच्छेद-3

❖ असमानता इस मूल लोकतांत्रिक प्रतिमानक का उल्लंघन करती है कि सभी नागरिक समान हैं। समानता वह संबंध है, जो कुछेक मूलभूत विशेषताओं के संबंध में व्यक्तियों के बीच होती है, जिसे वे सामान्य रूप से साझा करते हैं। नैतिकता की दृष्टि से कहें तो समानता एक स्वतः निर्धारित सिद्धांत है। इसलिये प्रजाति, जाति, लिंग, संजातीयता, निःशक्तता, या वर्ग जैसे आधारों पर व्यक्तियों के बीच भेदभाव नहीं किया जाना चाहिये। मानवीय स्थिति की ये विशेषताएँ नैतिक दृष्टि से संगत नहीं हैं। यह विचार कि व्यक्तियों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिये, न केवल इस कारण से कि इनमें कुछेक व्यक्तियों के पास कुछ असाधारण विशेषताएँ अथवा प्रतिभा होती है, जैसे, इनमें से कुछेक व्यक्ति कुशल क्रिकेट खिलाड़ी, प्रतिभाशाली संगीतकार अथवा विख्यात साहित्यकार होते हैं, बल्कि इसलिये भी कि वे सभी मनुष्य हैं, अब सामान्यबुद्धि-नीति का अंग बन गया है।

3. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. समानता, लोगों के लिये समाज के बहुविध व्यवहारों में आत्मविश्वास के साथ भाग लेने की एक पूर्वापेक्षा है।
2. असमानता का होना लोकतंत्र के अस्तित्व के लिये हानिकारक है।
3. सभी नागरिकों के समान होने का विचार ऐसा है, जिसे किसी लोकतंत्र में भी वास्तव में कार्यान्वित नहीं किया जा सकता है।
4. समानता के अधिकार को हमारे मूल्यों और दिन-प्रतिदिन की राजनीतिक शब्दावली में समाविष्ट किया जाना चाहिये।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 4

(d) केवल 3 और 4

परिच्छेद-4

- अभिजातीय शासन स्वयं को उस दायरे में अत्यधिक रूप से सीमाबद्ध करके विनष्ट कर लेता है, जिस दायरे में सत्ता सीमित होती है; अल्पतंत्रीय शासन तात्कालिक धन प्राप्ति के लिये असावधानीपूर्वक संघर्ष कर स्वयं को विनष्ट करता है। यहाँ तक कि, लोकतंत्र के अतिरेक से लोकतंत्र भी स्वयं को विनष्ट करता है। इसका मूलभूत सिद्धांत यह है कि पद धारण करने और लोक नीति निर्धारण करने का सबको समान अधिकार है। प्रथम दृष्टि में, यह एक सुखद व्यवस्था है; किंतु यह विनाशकारी बन जाता है, क्योंकि लोग समुचित रूप से शिक्षित नहीं होते हैं कि वे उत्तम शासकों और सर्वाधिक विवेकपूर्ण मार्ग का चयन कर सकें। लोगों में समझ नहीं होती है और वे केवल वही दोहराते हैं जो उनके शासक उन्हें कहना पसंद करते हैं। ऐसा लोकतंत्र, निरंकुश शासन या स्वेच्छाचारी शासन होता है।

-प्लेटो UPSC-2021

परिच्छेद-5

- ऊर्जा और जलवायु संबंधी नीति-निर्माण के क्षेत्र में भारत चुनौतीपूर्ण आसन्न भविष्य का सामना कर रहा है। समस्याएँ कई हैं: जीवाश्मी ईंधन की उत्पादन क्षमताओं में अस्थिरता; सबसे गरीब लोगों के लिये बिजली और खाना पकाने के आधुनिक ईंधन की सीमित पहुँच; अस्थिर वैश्विक ऊर्जा के संदर्भ में ईंधन के आयात में वृद्धिः बिजली के निरंतर मूल्य निर्धारण और शासन की चुनौतियों के फलस्वरूप बिजली की अत्यधिक कमी अथवा अतिरिक्त आपूर्ति; केवल यही नहीं, भूमि, जल तथा वायु पर बढ़ता हुआ पर्यावरणीय विवाद । किंतु यह सब इतना निराशाजनक भी नहीं है: बढ़ते हुए ऊर्जा दक्षता कार्यक्रम; एकीकृत शहरीकरण और परिवहन नीति पर चर्चा; ऊर्जा तक पहुँच और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिये ठोस प्रयास; और नवीकरणीय ऊर्जा हेतु साहसिक पहल, भले ही इनकी पूरी संकल्पना तैयार नहीं है, तथापि ये परिवर्तन की आशा की ओर संकेत करते हैं।

UPSC-2021

5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक संदेश प्रस्तुत करता है?

(a) भारत के ऊर्जा निर्णयन की प्रक्रिया सदैव जटिल और अंत: संबंधित है।

(b) भारत की ऊर्जा और जलवायु नीति संधारणीय विकास के लक्ष्यों के लिये अत्यधिक सुसंगत है।

(c) भारत की ऊर्जा और जलवायु संबंधी कार्रवाई, इसके व्यापक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों के लिये अनुकूल नहीं हैं।

(d) भारत के ऊर्जा निर्णयन की प्रक्रिया सीधे तौर पर आपूर्ति-उन्मुख है और मांग पक्ष की उपेक्षा करती है।

परिच्छेद-6

❖ ऐसी रिपोर्ट आई हैं कि बाज़ार में बेची जाने वाली कुछ प्रतिजैविक औषधियाँ (ऐंटिबायोटिक्स) वृद्धिकारक (ग्रोथ प्रोमोटर) के रूप में कुक्कुट (पोल्ट्री) और अन्य पशुधन को खिलाई जाती हैं। इन औषधियों के अति-प्रयोग से ऐसे सुपरबग और रोगाणु उत्पन्न हो सकते हैं, जो बहु-औषधियों के लिये प्रतिरोधी हों और जो मनुष्यों में भी प्रवेश कर सकते हैं। इससे सचेत होकर, कुछ कुक्कुट पालन कंपनियों ने कुक्कुटों का तेज़ी से वज़न बढ़ाने के लिये औषधियों का प्रयोग बंद कर दिया है। 1990 के दशक से जब डेनमार्क ने प्रतिजैविक वृद्धिकारक (ग्रोथ प्रोमोटर ऐन्टिबायोटिक) के प्रयोग पर रोक लगाई है, प्रमुख शूकर-माँस निर्यातक का कहना है कि अधिक संख्या में शूकर पैदा हो रहे हैं- और पशुओं में भी रोग कम हो रहे हैं।

UPSC-2021

UPSC

6. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक संदेश प्रस्तुत करता है?

(a) लोगों को पशु-पालन उत्पादों के सेवन से बचना चाहिये।

(b) पशुओं से उत्पन्न खाद्य पदार्थों के स्थान पर पौधों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों का उपयोग करना चाहिये।

(c) पशुओं पर प्रतिजैविक औषधियों (ऐंटिबायोटिक्स) के प्रयोग पर प्रतिबंध होना चाहिये।

(d) प्रतिजैविक औषधियों का प्रयोग केवल रोगों के उपचार के लिये ही किया जाना चाहिये।

परिच्छेद-7

❖ नीति-निर्माताओं और जन-संचार माध्यमों (मीडिया) ने खाद्य पदार्थों की आसमान छूती कीमतों के लिये कई कारकों को दोषी ठहराया है, जिसमें ईंधन की उच्च कीमतें, प्रमुख खाद्य-उत्पादक देशों में खराब मौसम और खाद्येतर पदार्थों के उत्पादन के लिये भूमि का उपयोग शामिल है। फिर भी, सर्वाधिक आबादी वाली उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं से खाद्य पदार्थों की मांग में वृद्धि पर अधिक बल दिया गया है। इससे इस बात की बहुत अधिक संभावना बनती है कि इन देशों में अत्यधिक खपत से खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है।

UPSC-2021

7. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. खाद्य पदार्थों के उच्च मूल्यों का एक कारण तेल उत्पादक देश हैं।
2. यदि निकट भविष्य में, विश्व में खाद्य संकट उत्पन्न होता है, तो वह उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में होगा।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-8

❖ आधुनिक विकास अर्थशास्त्र का मुख्य संदेश आय में वृद्धि को महत्त्व देना है, जिसका आशय सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में वृद्धि से है। सिद्धांततः, बढ़ती हुई जी.डी.पी., रोज़गार और निवेश के अवसर सृजित करती है। जब किसी ऐसे देश की आय में वृद्धि होती है, जिसकी जी. डी.पी. का स्तर कभी निम्न था, तब परिवार, समुदाय और सरकार अच्छे जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन हेतु कुछ निधि को अलग रखने में उत्तरोत्तर समर्थ होते हैं। आज विकास शब्दावली (डेवलपमेंट लेक्सिकॉन) में, जी.डी.पी. ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर आ गया है कि यदि कोई "आर्थिक वृद्धि" का उल्लेख करता है, तो हम जान जाते हैं कि उनका आशय जी.डी.पी. में वृद्धि से है।

UPSC-2021

8. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. बढ़ती हुई जी.डी.पी. किसी देश को विकसित देश बनने के लिये अनिवार्य है।
2. बढ़ती हुई जी.डी.पी. सभी परिवारों में आय का समुचित वितरण सुनिश्चित करती है।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-9

❖ अंजीर (जीनस फाइकस) के वृक्षों को भारत, पूर्वी एशिया और अफ्रीका में पवित्र माना जाता है और ये कृषि और शहरी क्षेत्रों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं, जहाँ अन्य बड़े वृक्ष नहीं होते हैं। प्राकृतिक वनों में, जब अन्य संसाधनों की कमी होती है, अंजीर के वृक्ष वन्य प्राणियों के लिये भोजन उपलब्ध कराते हैं, और विविध प्रकार के फलभक्षियों (फल खाने वाले प्राणियों) की घनी आबादी को सहारा देते हैं। यदि फलभक्षी पक्षी और चमगादड़ अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप वाले स्थानों पर लगे अंजीर के वृक्षों पर निंरतर रूप से जाते रहें, तो पवित्र अंजीर वृक्ष प्रचुर संख्या में फलभक्षियों को बढ़ावा दे सकते हैं। अनुकूल सूक्ष्म-जलवायु में, अंजीर वृक्षों के आस-पास अन्य जातियों के वृक्षों के असंख्य पौध उग सकते हैं।

UPSC-2021

9. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. प्राकृतिक वनों में, अंजीर के वृक्ष प्रायः आधारिक जातियाँ (की-स्टोन स्पीशीज़) हो सकती हैं।
2. अंजीर के वृक्ष वहाँ भी उग सकते हैं, जहाँ अन्य बड़े काष्ठीय वृक्ष की जातियाँ नहीं उग सकती हैं।
3. जैवविविधता के संरक्षण में पवित्र वृक्षों की भूमिका हो सकती है।
4. अन्य वृक्ष जातियों के बीजों के प्रकीर्णन में अंजीर वृक्षों की भूमिका है।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3

(c) केवल 2 और 4

(d) केवल 1, 3 और 4

परिच्छेद-10

- कृषि पारिस्थितिकी के मूल में यह अवधारणा है कि कृषि पारिस्थितिक तंत्रों को प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों के जैवविविधता स्तरों और कार्य-प्रणाली का अनुकरण करना चाहिये। ऐसी कृषि अनुकृतियाँ (मिमिक्स), अपने प्राकृतिक मॉडलों की तरह उत्पादक, पीड़क-प्रतिरोधी, पोषक-संरक्षक, तथा प्रघात और तनाव के प्रति समुत्थानशील (रिज़िलिअंट) हो सकती हैं। पारिस्थितिक तंत्रों में कुछ भी 'व्यर्थ' नहीं जाता है, और पोषक तत्त्वों का अनंत काल तक पुनः चक्रण होता है। कृषि पारिस्थितिकी का उद्देश्य पोषक लूपों को बंद करना है, अर्थात्, मिट्टी से निकल चुके सभी पोषक तत्त्वों को फार्मयार्ड खाद के अनुप्रयोग जैसे तरीकों के द्वारा मिट्टी में पुनः वापस पहुँचाना है। इसके अंतर्गत, प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग पीड़क नियंत्रण के लिये तथा अंतर-सस्य कृषि (इंटर-क्रॉपिंग) के द्वारा मृदा को उर्वर बनाने के लिये भी किया जाता है। कृषि पारिस्थितिकी पद्धतियों में पशुधन और फसलों के साथ वृक्षों का एकीकरण शामिल है।

UPSC-2021

10. निम्नलिखित पर विचार कीजियेः

1. भूमि-संरक्षण-सस्य (कवर क्रॉप्स)
2. उर्वरक-सिंचाई (फर्टिगेशन)
3. जल संवर्धन
4. मिश्रित कृषि
5. बहु-सस्यन (पॉलीकल्चर)
6. ऊर्ध्वाधर कृषि (वर्टिकल फार्मिंग)

❖ परिच्छेद के अनुसार, उपर्युक्त में से कौन-सी कृषि पद्धतियाँ कृषि पारिस्थितिकी के अनुकूल हो सकती हैं?

(a) केवल 1, 4 और 5

(b) केवल 2, 3, 4 और 5

(c) केवल 1, 2, 3 और 6

(d) केवल 4 और 6

परिच्छेद-11

❖ न केवल क्रेडिट कार्ड के विवरण और डाटाबेस जैसे अमूर्त डाटा के साथ कंप्यूटरों का संबंध उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, बल्कि भौतिक वस्तुओं की वास्तविक दुनिया और संवेदनशील मानव शरीर के साथ भी यह संबंध बढ़ रहा है। एक आधुनिक कार, पहियों पर एक कंप्यूटर है; एक विमान, पंखों पर एक कंप्यूटर है। "इंटरनेट ऑफ थिंग्स" के आगमन से सड़क चिह्नों और एम.आर.आई. स्कैनरों से लेकर कृत्रिम अंगों (प्रॉस्थैटिक्स) और इंसुलिन पंपों तक प्रत्येक वस्तु में कंप्यूटर शामिल हो जाएगा। इस बात का प्रमाण नगण्य है कि ये उपकरण (गैजेट), इनके डेस्कटॉप समकक्षों की तुलना में अधिक विश्वासयोग्य होंगे। हैकर पहले ही यह प्रमाणित कर चुके हैं कि वे इंटरनेट से जुड़ी कारों और पेसमेकरों का दूरस्थ नियंत्रण (रिमोट कंट्रोल) कर सकते हैं।

UPSC-2021

11. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) कंप्यूटर पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं।

(b) सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनियाँ साइबर सुरक्षा को गंभीरता से नहीं लेती हैं।

(c) डाटा सुरक्षा संबंधी कठोर नियमों की आवश्यकता है।

(d) संचार प्रौद्योगिकी की वर्तमान प्रवृत्ति, भविष्य में हमारे जीवन को प्रभावित करेगी।

परिच्छेद-12

- गरीबी, असमानता, अस्वास्थ्यकर और अस्वच्छता की दशाओं से जूझता सामाजिक और भौतिक वातावरण संक्रामक रोगों का खतरा उत्पन्न करता है। स्वास्थ्य-विधि (हाइजीन) के भिन्न-भिन्न स्तर हैं: व्यक्तिगत, घरेलू और सामुदायिक स्वास्थ्य-विधि। इसमें कोई संदेह नहीं है कि व्यक्तिगत सफाई रखने में संक्रामक रोगों की दर में कमी आती है। किंतु इस क्षेत्र में बाज़ार के प्रवेश ने सुरक्षा की झूठी भावना को जन्म दिया है, जो विज्ञापनों के आक्रामक प्रभाव द्वारा अनुकूलित होती है और प्रबल होती है। पश्चिम यूरोप का अनुभव यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य-विधि के साथ-साथ वातावरणीय दशाओं में सामान्य सुधार तथा स्वच्छ जल, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा जैसे घटकों से शिशु/बाल मृत्यु/संक्रमण की दरों में पर्याप्त कमी आई है। हाथों को स्वच्छ रखने के प्रति जुनून व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर बाज़ार के निरंतर प्रभाव को भी लाता है, जिससे पारिस्थितिकी पर इसके नकारात्मक प्रभाव की अवहेलना होती है अथवा उसे हाशिये पर डाल दिया जाता है और इससे प्रतिरोधी रोगाणुओं का प्रादुर्भाव होता है।

UPSC-2021

12. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. ऐसे लोग जिनमें व्यक्तिगत स्वास्थ्य-विधि का जुनून होता है, वे सामुदायिक स्वास्थ्य-विधि पर ध्यान नहीं देते हैं।

2. व्यक्तिगत स्वच्छता से बहु-औषधि प्रतिरोधी रोगाणुओं के प्रादुर्भाव का निवारण किया जा सकता है।

3. स्वास्थ्य-विधि के क्षेत्र में बाज़ार के प्रवेश से संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ा है।

4. संक्रामक रोगों के बोझ को कम करने के लिये वैज्ञानिक और सूक्ष्म-स्तरीय हस्तक्षेप पर्याप्त नहीं हैं।

5. यह जन स्वास्थ्य उपायों के माध्यम से कार्यान्वित सामुदायिक स्वास्थ्य-विधि है, जो संक्रामक रोगों के विरुद्ध लड़ाई में वास्तव में कारगर है।

- उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3 और 4

(c) केवल 4 और 5

(d) केवल 1, 2 और 4

परिच्छेद-13

❖ शोधकर्ताओं ने मटर के कीड़ों (पी-ऐफिड) और रस चूसने वाले कीड़ों से युक्त कृत्रिम तृण-भूखंडों को रात में स्ट्रीट लाइट के अनुरूप आलोकित किया। इन्हें दो अलग-अलग प्रकार के प्रकाश में रखा गया-नवीनतर वाणिज्यिक LED प्रकाश के सदृश श्वेत प्रकाश और सोडियम स्ट्रीट लैंपों के सदृश एंबर प्रकाश । मटर कुल के जंगली पौधे - जो कि तृणभूमि में मटर के कीड़ों के लिये खाद्य के स्रोत हैं- इन पौधों पर निम्न तीव्रतायुक्त एंबर प्रकाश डालने पर यह देखा गया कि इससे पुष्पण प्रेरित होने की बजाय, बाधित होता है। प्रकाश के प्रभाव के अंतर्गत, सीमित मात्रा में खाद्य उपलब्ध होने के कारण कीड़ों (ऐफिड) की संख्या में भी उल्लेखनीय कमी आई।

UPSC-2021

13. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) उच्च तीव्रतायुक्त प्रकाश की तुलना में निम्न तीव्रतायुक्त प्रकाश का पौंधों पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(b) प्रकाश प्रदूषण का किसी पारिस्थितिक तंत्र पर स्थायी रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(c) पौधों के पुष्पण के लिये अन्य-रंगों के प्रकाश की तुलना में श्वेत रंग का प्रकाश बेहतर है।

(d) किसी पारिस्थितिक तंत्र में उपयुक्त तीव्रता का प्रकाश न केवल पौधों के लिये बल्कि प्राणियों के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।

परिच्छेद-14

- सभी पुष्पधारी पौधों की जातियों में से लगभग 80 प्रतिशत में परागण प्राणियों द्वारा होता है, जिसमें पक्षी और स्तनधारी प्राणी शामिल हैं, किंतु कीट मुख्य परागणकारी हैं। परागण हमें पौधों से उत्पन्न कई औषधियों के साथ-साथ विविध प्रकार के खाद्य उपलब्ध कराने के लिये उत्तरदायी है। विश्व की कम-से-कम एक-तिहाई कृषि फसलें परागण पर निर्भर हैं। परागण के लिये मक्षिका सर्वाधिक प्रभावी वर्ग हैं और ये चार सौ से भी अधिक फसलों के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। परागण एक ऐसी अनिवार्य व्यवस्था है जो पौधों और प्राणियों के बीच जटिल संबंधों का परिणाम है, और इनमें से किसी की भी कमी या ह्रास होने से दोनों का अस्तित्व प्रभावित होता है। प्रभावी परागण के लिये मूल प्राकृतिक वनस्पति के आश्रय जैसे संसाधनों की आवश्यकता है।

UPSC-2021

14. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. परागणकारी प्राणियों की विविधता के बिना भारत के अनाज खाद्यान्न का संधारणीय उत्पादन संभव नहीं है।
2. उद्यान फसलों की एकधान्य कृषि, कीटों के अस्तित्व के लिये बाधक है।
3. प्राकृतिक वनस्पति से विहीन कृषि क्षेत्रों में परागणकारियों की अत्यधिक कमी हो जाती है।
4. कीटों में विविधता, पौधों में विविधता लाती है ।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1 और 2
(d) केवल 3 और 4

परिच्छेद-15

- तमिलनाडु की कावेरी नदी घाटी पर क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का उपयोग करते हुए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर किये गए अध्ययन में अधिकतम और न्यूनतम तापमानों में वृद्धि की प्रवृत्ति और वर्षा के दिनों की संख्या में कमी देखी गई। इन जलवायवी परिवर्तनों का इस क्षेत्र के जलीय चक्रों पर प्रभाव पड़ेगा, परिणामस्वरूप अधिक मात्रा में जल बह जाएगा और जल के पुनर्भरण (रीचार्ज) में कमी आएगी, तथा भौमजल स्तर प्रभावित होंगे। इसके अतिरिक्त, राज्य में सूखा पड़ने की बारंबारता में वृद्धि हुई है । इसके कारण, फसलें बचाने के लिये भौमजल संसाधनों पर किसानों की निर्भरता बढ़ी है।

UPSC-2021

15. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मूल भाव को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का विकास जलवायु-अनुकूल (क्लाइमेट-स्मार्ट) कृषि पद्धतियों का चयन करने में सहायक है।

(b) शुष्क-भूमि कृषि पद्धतियाँ अपनाकर भौमजल संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया जा सकता है।

(c) जलवायु परिवर्तन से जल संसाधनों का महत्त्व बढ़ा है, जबकि साथ-ही-साथ इन पर संकट भी बढ़ा है।

(d) जलवायु परिवर्तन के कारण, किसानों को अधारणीय आजीविका और जोखिमपूर्ण साधक-रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं।

परिच्छेद-16

- शोधकर्ता पर्यावरणीय प्रदूषक बिस्फिनॉल A (BPA) के तंत्रिआविषी (न्यूरोटॉक्सिक) प्रभावों का पता लगाने के लिये स्टेम कोशिकाओं का उपयोग करने में सफल रहे। उन्होंने मानव में हृदय रोग, मधुमेह और परिवर्धन अपसामान्यताओं के लिये ज़िम्मेदार माने जाने वाले यौगिक BPA के अनुप्रयोग के द्वारा मूषक की भ्रूणीय स्टेम कोशिकाओं के विभेदन के दौरान जीन अभिव्यक्ति प्रोफाइल की जाँच के लिये जैव-रासायनिक और कोशिका-आधारित आमापन के संयोजन का उपयोग किया। वे अंतःत्वचा और बाह्यत्वचा जैसे प्राथमिक जनन स्तरों (जर्म लेयर) के सही विनिर्देशन के लिये BPA आविषालुता (टॉक्सिसिटी) का पता लगाने और आमापन करने, तथा तंत्रिका प्रजनक कोशिकाएँ सृजित करने में सफल रहे।

UPSC-2021

16. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं।

1. BPA, जीवों में (इन वीवो) भ्रूणीय विकास को परिवर्तित कर सकता है।
2. प्रदूषण से होने वाले रोगों के उपचारों की खोज करने में जैव-रासायनिक और कोशिका-आधारित आमापन उपयोगी हैं।
3. पर्यावरणीय प्रदूषकों के शरीर-क्रियात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिये भ्रूणीय स्टेम कोशिकाएँ मॉडल के रूप में कार्य कर सकती हैं।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं ?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(b) 1, 2 और 3

परिच्छेद-17

- मध्ययुगीन व्यापारी चीन के बाज़ारों तक पहुँचने के लिये रेशम मार्ग (सिल्क रोड) के खतरों का जोखिम उठाते थे; 15वीं शताब्दी में, हल्के पाल वाले पुर्तगाली जहाज़ों ने ज्ञान की अपेक्षा स्वर्ण और मसालों की खोज में परिचित विश्व की सीमाओं से परे यात्रा की। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हमेशा संसाधनों की खोज ही सरहदों की खोज करने के लिये प्रेरक रही है। विज्ञान और जिज्ञासा कमज़ोर प्रेरक हैं। चाहे सौर मंडल हो अथवा अंतरातारकीय अंतरिक्ष, आर्थिक इंजन का निर्माण ही अंतरिक्ष को उन्मुक्त करने का एकमात्र साधन है- और संसाधनों का निष्कर्षण ही वह इंजन है।

UPSC-2021

17. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सार है?

(a) किसी भी मानवीय प्रयास का प्राथमिक उद्देश्य धन का सृजन करना होता है।

(b) अंतरिक्ष हमारी भावी अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करेगा, चाहे वह सौर मंडल में विद्यमान अंतरिक्ष हो अथवा अंतरातारकीय अंतरिक्ष ।

(c) मनुष्य मुख्यतः आर्थिक प्रतिफल के लिये नई सरहदों की खोज करने के लिये प्रेरित होते हैं।

(d) कुछ लोगों के जोखिम लेने का व्यवहार ही धन सृजन का आधार होता है।

परिच्छेद-18

- “....... अधिकांश लोग सहमत होंगे कि शायद ऐसी कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, जहाँ सत्य बोलने से अधिक हानि होगी, जान-बूझकर असत्य बोलना गलत है। यहाँ तक कि सर्वाधिक सत्यवादी लोग संभवतः बहुत सारे असत्य बोलते हैं, जिन्हें अर्थ-विषयक (सिमेंटिक) असत्य माना जा सकता है; उनके शब्द प्रयोग में कुछ मात्रा में असत्य होता है, जो कमोबेश सोचा-समझा होता है।”

UPSC-2021

18. इस परिच्छेद के प्रथम अंश में, किस विचार का उल्लेख किया गया है?

(a) असत्य बोलने के संबंध में सहमति

(b) असत्य बोलने के संबंध में असहमति

(c) सत्य बोलने के संबंध में असहमति

(d) सत्य बोलने से होने वाली हानि के संबंध में असहमति

19. निम्नलिखित में से कौन-सी आदत अच्छे लोगों में बहुत पाई जाती है?

(a) सत्य और असत्य को मिश्रित करना

(b) सत्य को असत्य के साथ साभिप्राय मिश्रित करना

(c) तथ्यों का मिथ्याकरण

(d) सत्य का संपूर्ण छिपाव

परिच्छेद-19

❖ क्या कोई लोकतंत्र दीर्घ समय तक कल्याणकारी राज्य होने से बच सकता है? जन कल्याण को पूर्ण रूप से बाज़ार पर क्यों नहीं छोड़ा जा सकता है? बाज़ार और लोकतंत्र के बीच अंतर्निहित तनाव विद्यमान है। बाज़ार एक व्यक्ति एक मत (वोट) के सिद्धांत पर कार्य नहीं करते हैं, जैसा कि लोकतंत्र में होता है। कोई व्यक्ति बाज़ार से क्या ले पाता है, यह उसकी प्रतिभा, कौशल, क्रय-शक्ति तमा मांग और आपूर्ति की क्षमता पर निर्भर करता है। बाज़ार व्यक्ति के प्रयासों और कौशल का प्रतिफल देते हैं, और बहुत से लोगों को समाज के निचले पायदान से ऊपर भी उठा सकते हैं, किंतु कुछ लोगों को ऐसे कौशलों के विकास के लिये कभी अवसर ही नहीं मिल पाता है, बाज़ार में जिनकी मांग है; ऐसे लोग सामान्यतः बहुत गरीब होते हैं और बहुत अक्षम होते हैं; अथवा इनमें कौशल विकसित करने में काफी समय लगता है। बाज़ार नौकरियाँ सृजित करके अकुशल लोगों की भी सहायता कर सकते हैं, किंतु पूंजीवाद हमेशा से बेरोज़गारी विस्फोट का साक्षी रहा है।

UPSC-2021

20. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. आधुनिक लोकतंत्र बाज़ार की शक्तियों पर निर्भर करते हैं ताकि वे कल्याणकारी राज्य बन सकें।
2. लोकतंत्रों को प्रभावी बनाने के लिये आवश्यक पर्याप्त आर्थिक वृद्धि को बाज़ार सुनिश्चित करते हैं।
3. आर्थिक विकास में पीछे छूट गए लोगों के लिये सरकारी कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-20

- हमारे विद्यालयों में, हम अपने बच्चों को भौतिकी, गणित और इतिहास तथा हमारे पास जो कुछ ज्ञान है, उनके बारे में, सब कुछ पढ़ाते हैं जिन्हें जानने की आवश्यकता है। किंतु क्या हम उन्हें देश में महामारी की तरह फैले जातिभेद की कड़वाहट के बारे में हमारी भूमि के बहुत बड़े हिस्से को ग्रसित करने वाले सूखे के दुष्परिणामों के बारे में, महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता (जेंडर
- सेंसिटिविटी) के बारे में, विकल्प के रूप में निरीश्वरवाद की संभावना, आदि के बारे में शिक्षा देते हैं? यह भी उतना ही है कि क्या हम उन्हें प्रश्न पूछने की शिक्षा देते हैं, अथवा उन्हें केवल निष्क्रिय रहकर हमारे प्रज्ञान ग्रहण करने की शिक्षा देते हैं? विद्यालय की संवृत (कोकून्ड) दुनिया से निकलकर, अचानक ही, किशोर/किशोरी स्वयं को विश्वविद्यालय की उन्मुक्त दुनिया में पाता/पाती है। यहाँ वह विचारों, प्रभावों और विचारधाराओं के द्वंद्व में बह जाता/जाती है। यह संक्रमण उसके लिये कष्टदायी हो सकता है, जिसे प्रश्न पूछने और राय कायम करने के लिये हतोत्साहित किया गया है।

UPSC-2021

21. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के केंद्रीय विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) विद्यालयी पाठ्यक्रम बच्चों और अभिभावकों की अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं है।

(b) शैक्षिक उपलब्धियों पर बल देने से व्यक्तित्व और कौशल के विकास के लिये समय मिलता है।

(c) बच्चों को बेहतर नागरिक बनने के लिये तैयार करना, शिक्षा व्यवस्था की ज़िम्मेदारी होनी चाहिये।

(d) बेहतर नागरिक बनने के लिये, वर्तमान विश्व व्यवस्था शैक्षिक विषय-वस्तु के अतिरिक्त, सामाजिक और जीवन-साधक कौशल की मांग भी करती है।

परिच्छेद-21

❖ हार्वर्ड और एम.आई.टी. जैसे सर्वोत्तम विश्वविद्यालय, उनके वेतन-पत्रक (पे-रोल) पर वास्तव में कुछ उत्कृष्ट अध्यापकों की सुविधा होने के बावजूद, 'फ्लिप कक्षा' (Flipped classroom) प्रारूप को तेज़ी से अपना रहे हैं, जहाँ विद्यार्थी घर बैठे वीडियो व्याख्यान सुनते हैं, और कक्षा के समय में अपने ज्ञान का अनुप्रयोग, समस्याओं का समाधान, उदाहरणों पर चर्चा, इत्यादि करते हैं। प्रोफेसर उस चर्चा को संचालित करते हैं और आवश्यकतानुसार अपने विचार देते हैं, उन अंशों को स्पष्ट करते हैं, जो विद्यार्थियों को अस्पष्ट प्रतीत होते हैं और उन्हें ऐसे उन्नत विचारों से अवगत कराते हैं जो प्रासंगिक हों। इन विश्वविद्यालयों ने अपने वीडियो व्याख्यानों को पूरे विश्व में सबके लिये निःशुल्क उपलब्ध किया है। वे संपूर्ण विश्व के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को इन ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को एकीकृत करके अपने अध्यापन में शामिल करने, अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त खंडों को लेकर उसके आधार पर पैकेज तैयार करने के लिये भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

UPSC-2021

22. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के केंद्रीय विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) पारंपरिक पद्धति की तुलना में कक्षा शिक्षण संचालित करने की ऑनलाइन पद्धति से विश्वविद्यालयों की क्षमता बेहतर होगी।

(b) विषय-वस्तु में कोई कमी किये बिना उच्चतर शिक्षा सहजता से और कम व्यय में उपलब्ध कराई जा सकेगी।

(c) हमें उच्चतर शिक्षा से संबंधित आधारिक संरचना में अधिक निवेश करने की आवश्यकता नहीं है और तब भी, हम बेहतर मानवीय और सामाजिक पूंजी विकसित कर सकते हैं।

(d) उच्चतर शिक्षा में निजी क्षेत्र के संस्थानों के साथ-साथ कोचिंग संस्थान इस अवसर का लाभ ले सकते हैं और फल-फूल सकते हैं।

परिच्छेद-22

- हमारे नगर, जनसंख्या के अधिक संकेन्द्रण और अपर्याप्त आधारिक संरचनाओं के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक सुभेद्य हैं। इसके अतिरिक्त, उनमें जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है, किंतु हमने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के निराकरण के लिये अभी तक कोई प्रणाली विकसित नहीं की है। जी.डी.पी. में, हमारे नगरों का योगदान 65% है, किंतु उनमें जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं। वायु की गुणता, परिवहन, आदि, से संबंधित समस्याओं पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है, जो कि संधारणीय समाधान ढूंढ़ने के लिये अत्यावश्यक हैं। हमें नगर योजना बनाने के कार्य में नागरिकों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है और ऐसे पारिस्थितिक तंत्र का सृजन करना होगा जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

UPSC-2021

23. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष हो सकता है?

(a) हमारे नगरों में पर्याप्त स्वायत्तता के साथ सुस्पष्ट प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक है।

(b) निरंतर बढ़ता हुआ जनसंख्या घनत्व, संधारणीय विकास करने के हमारे प्रयासों में बाधक है।

(c) हमारे नगरों के रख-रखाव और विकास के लिये हमें संधारणीयता संबंधी हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

(d) भारत की आधारिक संरचना और संधारणीयता संबंधी समस्याओं के लिये विकास की सार्वजनिक-निजी भागीदारी पद्धति व्यवहार्य दीर्घावधि समाधान है।

परिच्छेद-23

❖ नैसर्गिक राज्य में ऐसा कुछ भी विद्यमान नहीं हो सकता, जिसे सामान्य सहमति से अच्छा या बुरा कहा जा सके, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जो नैसर्गिक राज्य में रहता है, वह केवल अपने ही लाभ का ध्यान रखता है, और अपनी पसंद के अनुसार तथा जहाँ तक कि उसके अपने लाभ का संबंध है, अच्छे या बुरे का निर्णय करता है, और स्वयं को किसी भी विधि (लॉ) के अंतर्गत अपने सिवा अन्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं मानता है, और इसलिये, नैसर्गिक राज्य में अपराध की कल्पना नहीं की जा सकती, केवल सिविल राज्य में ही ऐसा संभव है, जहाँ सामान्य सहमति से अच्छे या बुरे का निर्णय किया जाता है, और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को राज्य के प्रति उत्तरदायी मानता है।

UPSC-2021

24. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मूल विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

(a) क्या सही या गलत है- ये अवधारणाएँ राज्य के निर्माण के कारण अस्तित्व में हैं।

(b) क्या सही या गलत है- इस बारे में जब तक कोई शासक प्राधिकारी निर्णय नहीं लेता, कोई भी व्यक्ति नैतिक रूप से सही नहीं हो सकता।

(c) नैसर्गिक राज्य में व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अनैतिक और स्वार्थी होता है।

(d) क्या सही या गलत है- यह विचार मानव जाति की उत्तरजीविता के लिये आवश्यक है।

परिच्छेद-24

- आसन्न भविष्य में, हम कई नई प्रौद्योगिकियाँ-कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एवं रोबोटविज्ञान (रोबोटिक्स), 3D, ग्राहकों की मांग के अनुसार निर्मित जैविक एवं औषधीय उत्पादों, घातक स्वचालित शस्त्रों एवं चालकरहित कारों का बढ़ता पण्यकरण (कमोडिफिकेशन) देखेंगे। इससे विकट समस्याएँ उत्पन्न होंगी। इस नैतिक प्रश्न पर प्रायः विचार किया गया है कि चालकरहित कार नियम न मानने वाले पदातिक (जेवॉकर) को टक्कर मारने एवं अचानक एक ओर मुड़कर कार को करने के बीच में निर्णय कैसे लेगी। इसका उत्तर दोनों है, सरल-मानव जीवन को बचाना, और जटिल भी । कितने कोण पर कार को मुड़ना चाहिये- क्या केवल उस नियम को न मानने वाले पदातिक को बचाने भर या उससे अधिक ?

- यदि चालकरहित कार डबलिन में होगी, तो निर्णय कौन करेगा? उसका निर्णय आइरिश सरकार करेगी, या कैलिफोर्निया में मौजूद कार का मूल कूटलेखक करेगा, या फिर हैदराबाद में मौजूद वह सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर करेगा, जिसे कार का अनुरक्षण कार्य सौंपा गया है? यदि भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय क्षेत्राधिकारों में मानव जीवन को प्राथमिकता देने के बारे में भिन्न-भिन्न सूक्ष्म नियम (फाइन प्रिंट) होंगे, तो यह पारराष्ट्रीय (ट्रांसनेशनल) निर्णयों सहित बीमा एवं निवेश संबंधी निर्णयों को किस तरह प्रभावित करेगा?

UPSC-2021

25. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन-से कथन विवेकपूर्ण, युक्तियुक्त एवं व्यावहारिक निहितार्थों को बेहतर दर्शाते हैं?

1. अत्यधिक वैश्वीकरण किसी भी देश के सर्वोत्तम हित में नहीं है।
2. आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ आर्थिक सीमाओं को तेज़ी से मिटा रही हैं।
3. नवाचार और पूंजी ने राज्य के अधिकार क्षेत्र पर अतिक्रमण कर लिया है।
4. प्रत्येक देश की सार्वजनिक नीति अपनी निजी आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) के विकास पर केंद्रित होनी चाहिये।
5. भू-राजनीति को कई अस्पष्टताओं और अनिश्चितताओं का निराकरण करना होगा।

❖ नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनियेः

(a) केवल 1, 4 और 5

(b) केवल 1, 2, 3 और 4

(c) केवल 2, 3 और 5

(d) 1, 2, 3, 4 और 5

परिच्छेद-25

- दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (कोड) के अनुसार भारतीय बैंकों के दिवालिया मामलों का समाधान किया जाए, तो वह अनर्जक परिसंपत्ति (एन.पी.ए.) स्थिति को कुछ सीमा तक नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण द्वारा किये जाने वाले समाधानों की गति धीमी होने के बावजूद, यह संहिता भावी ऋ ण-चक्रों में बैंक बहियों को शोधित (क्लीन अप) करने में सहायक हो सकती है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का पुनः पूंजीकरण भी बैंकों की गुंजाइश पूंजी (कैपिटल कुशन) को बढ़ाने और उन्हें अधिक ऋ ण देने और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिये प्रेरित करने में सहायक हो सकता है। किंतु, अशोध्य कर्ज़ का समाधान और पुनः पूंजीकरण, इस समाधान का एक अंगमात्र ही हैं, क्योंकि वे उस अनियंत्रित ऋ ण को रोकने में बहुत कम ही सहायक हो सकते हैं, जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली को उसकी वर्तमान दयनीय अवस्था में ला खड़ा किया है। जब तक अधारणीय ऋ ण की समस्या के समाधान के लिये प्रणालीगत सुधार नहीं किये जाते हैं, तब तक भावी ऋ ण-चक्र बैंकिंग प्रणाली पर दबाव डालते रहेंगे।

UPSC-2021

26. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और व्यावहारिक सुझाव को बेहतर दर्शाता है?

(a) बैंकों द्वारा दिये जाने वाले ऋ ण का सघन अनुवीक्षण (मॉनीटर) और सघन विनियमन केंद्र सरकार को करना चाहिये।

(b) ब्याज की दरें निम्न रखी जानी चाहिये, जिससे कि अधिक ऋण देने, ऋण वृद्धि को प्रोत्साहित करने और इसके ज़रिये आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिये बैंकों को प्रेरित किया जा सके।

(c) कई बैंकों का कुछ बड़े बैंकों में विलय करना ही बैंकों को लाभकारी बनाने और उनके खराब निष्पादन को रोकने का दीर्घकालिक समाधान है।

(d) अशोध्य ऋ ण की समस्या के दीर्घकालिक समाधान के रूप में, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।

परिच्छेद-26

- भारत में, समष्टि आर्थिक नीति का उद्देश्य लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाना है, और ऐसीसमष्टि आर्थिक नीति की किसी भी शाखा (विंग), मौद्रिक हो या राजकोषीय, दूसरी शाखा के सक्रिय समर्थन के बिना, स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकती।

UPSC-2021

27. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन, उपर्युक्त परिच्छेद के उप-सिद्धांत को बेहतर दर्शाता है?

(a) केंद्रीय बैंक सरकार से स्वतंत्र होकर कार्य नहीं कर सकता।

(b) सरकार को वित्तीय बाज़ारों और संस्थाओं का सघन विनियमन करना चाहिये।

(c) बाज़ार अर्थव्यवस्था सरकार की समाजवादी नीतियों के संगत नहीं है।

(d) लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाने के लिये वित्तीय क्षेत्र में सुधार आवश्यक हैं।

THANK YOU!